Year-9-10; 2018-19
ISSN–2231-1130

Impact Factor – 3.521(IIJIF)
●●●●VEETHIKA●●●

सूफीवाद : इस्लामिक उदारता का परिष्कृत दृष्टिकोण

अनुपम आनन्द*

सूफीवाद इस्लाम के अन्तर्गत एक उपविचारधारा है जिसमें प्रेमतत्व को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। यह प्रेममार्गी धारा इस्लाम का एक उदार संस्करण प्रस्तुत करती है। यहाँ पर बन्दा और खुदा का संबंध दास्य भाव से इतर प्रेमभाव पर आधारित है। यह जीव और ब्रह्म के ए काकार होने को प्रेम अथवा भक्ति का अंतिम लक्ष्य मानता है। सूफीवाद में भक्ति अथवा प्रेम का साधन बुद्धि (अक्ल) न होकर हृदय (कल्ब) होता है। यह विचारधारा इस्लाम के आधारभूत सिद्धांतों की अनुचित व्याख्या से उपजे रूढ़िवाद के परिणामस्वरूप विकसित हुई। उदार इस्लाम के प्रभाव के कारण अरब क्षेत्र में उपस्थित विलासिता के स्थान पर सच्चे साधकों की प्रेमात्मक एवं त्यागपूर्ण विचारों ने सूफी मतवाद को उत्पन्न किया। ईरान की संस्कृति में 8वीं व 9वीं शताब्दी में इसे विकसित होने का अनुकूल अवसर प्राप्त हुआ। इसने सूफी दर्शन एवं सूफीमत के विकास में अग्रणी भूमिका ईश्वर के कठोरतम स्वरूप की रचना की। अतः इस इस्लाम की विचारधारा का सरलीकरण ही सूफीवाद है।

हिन्दी के कवि रामधारी सिंह दिनकर ने संस्कृति के चार अध्याय में स्पष्ट लिखा है – इस्लाम ने, मूल रूप से, जिस ईश्वर की कल्पना की थी, वह प्रतापी और स्वेच्छाचारी प्रभु की कल्पना थी। अल्लाह शब्द का अर्थ ही शक्ति सम्पन्न पुरुष होता है। इस्लाम ने ईश्वर के उन गुणों को प्रधानता दी, जिनसे प्रेम कम, भय अधिक हो सकता था। परमात्मा की दया के सामने झुके रहने का भाव इस्लाम की सबसे बड़ी विशेषता है। समय के साथ मनुष्य और अल्लाह (ईश्वर) के मध्य यह सम्बन्ध ढीला पड़ने लगा। मनुष्य अपने स्वभाव के अनुरूप ईश्वर से भय के स्थान पर प्रेम करने लगा। सूफीवाद के विकास में यह भावना भी सक्रिय भूमिका निभा रही थी।

सूफी शब्द की उत्पति मूलक अर्थ पर विद्वानों में मतैक्य नहीं है। इस शब्द की व्याख्या विभिन्न दृष्टिकोणों से की गयी है। सबसे प्रचलित मान्यता के अनुसार 'सूफी' शब्द का विकास 'सफ' शब्द से हुआ है, जिसका अभिप्राय ऊन या ऊनी कपड़ा होता है। सूफी साधक आरम्भिक समय में ऊन से बने कपड़े पहनते थे। इस मान्यता के अनुसार सम्भवतः इसीलिये इनको सूफी कहा गया। दूसरे मत के अनुसार सूफी शब्द की उत्पति 'सफा' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है पवित्रता या शुद्धि की अवस्था। आचरण की पवित्रता व शुद्धता के कारण इनको सूफी कहा गया है। यद्यपि सूफी शब्द की व्याख्या में अन्य मत भी प्रचलित हैं परन्तु सामान्य दृष्टिकोण से 'तवस्सुफ' को मानने वाले साधकों को सूफी कहा जाता है।

सूफियों ने मनुष्य की चेतना को चार भागों में विभक्त किया है, नफस, अक्ल, कल्ब और रूह, जिनके अर्थ क्रमशः इन्द्रियाँ, बुद्धि, हृदय और आत्मा है। इन चारों में इन्होंने कल्ब को सबसे महत्वपूर्ण माना है। कल्ब के द्वारा ही खुदा की प्राप्ति सम्भव है, क्योंकि कल्ब में ही खुदा का प्रतिबिम्ब व्यक्त होता है। यह कल्ब रूपी दर्पण जितना स्वच्छ होगा, ईश्वर का उतना ही स्पष्ट स्वरूप इसमें दिखायी देगा। ऐसी इनकी मान्यता है। इसे स्पष्ट करते हुए कन्हैया सिंह ने अपनी पुस्तक 'उदार इस्लाम का सूफी चेहरा' में लिखते हैं सूफी जो अपने को कुरान से ऊपर स्वयं के पूज्य तथा 'हक' कहते हैं तो इसका तात्पर्य यह होता है कि अल्लाह की रूह मनुष्य के अन्दर है और अपनी रूह को जान लेता है, वह खुदा को जानता है। इस प्रकार ईश्वर और जीव का अंशांशी सम्बन्ध है।

यद्यपि सूफीवाद की मौलिक उत्पत्ति इस्लाम से हुई है, परन्तु इस भक्ति पद्धति पर उपनिषदों में विद्यमान अद्वैतवाद और प्लाटिनस के 'नत्य प्लेटोवाद' का समान प्रभाव है। इस्लाम की मान्यता के अनुसार खुदा, जगत और जीव तीनों की लौकिक एवं भिन्न सत्ताएँ हैं। खुदा इतना पवित्र है कि उसे संसार और जीव से अभिन्न नहीं माना जा सकता है। खुदा और बन्दे में राजा और प्रजा या स्वामी और दास का सम्बन्ध है, प्रेम का नहीं। इस मान्यता को खारिज करना सूफियों के लिए महत्वपूर्ण था, इसीलिए उन्होंने नव्य प्लेटोवाद और भारतीय उपनिषद दर्शन में दिखने वाले अद्वैतवाद की भावभूमि पर अपनी मान्यताएँ प्रस्तुत की। नयी विकसित धारणा में बन्दा अपनी साधना से खुदा से 'एक' हो सकता है। अद्वैतवाद का 'अहं ब्रह्मास्मि' या सोऽहम् का भाव यहाँ 'अनलहक' कहलाता है। जिसका अर्थ बन्दे और खुदा की ए कता है। यह विचार इस्लाम विरूद्ध तथा अद्वैतवाद से प्रभावित है। सूफीवाद के अन्तर्गत बन्दा खुदा की प्राप्ति प्रेम के माध्यम से करता है। यह प्रेम 'इश्कमजाजी' अर्थात् लौकिक प्रेम से प्रारम्भ होता है और 'इश्कहकीकी' अर्थात् ईश्वरीय प्रेम के रूप में चरम अवस्था में पहुँचता है। लौकिक प्रेम के प्रतीक को सफल बनाने के लिए सूफियों ने खुदा को नारी के रूप में तथा बन्दे को पुरूष के रूप में अभिव्यक्त किया है। कन्हैया सिंह पुनः लिखते हैं – परम्परित इस्लाम भावना के अन्तर्गत 'मैं ब्रह्म हूँ' की भावना को स्थान नहीं था, क्योंकि वहाँ ईश्वर और जीव दोनों अलग–अलग सन्ताएँ मानी गयी हैं। सूफियों ने अपने चिन्तन में ब्रह्मवादी विचार का समावेश किया है। मंसूर हल्लाम की प्रसिद्ध उक्ति 'अनहलक', 'मैं ही सत्य

*शोध छात्र (हिन्दी) महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उ0 प्र0

ब्रह्म हूँ' हिन्दू दर्शन के 'अहम् ब्रह्मास्मि' का अनुवाद प्रतीत होता है।

भारतीय सामाजिक ताने बाने के सन्दर्भ में सूफी सन्तों एवं कवियों का सर्वप्रथम योगदान सांस्कृतिक समन्वय और साम्प्रदायिक सौहार्द स्थापित करने में रहा। इस्लाम को औपनिषदिक चिंतन से मिलाकर इस्लाम की संकल्पना से परे जाकर 'अनअलहक' का उद्घोष करना इन सूफियों का साहसिक कार्य रहा है। तत्कालीन समय में हिन्दू मुस्लिम साम्प्रदायिकता भारतीय समाज के समक्ष एक बड़ी चुनौती थी। सूफियों के समानान्तर कबीर जैसे सन्त मुल्लों और पण्डों को साम्प्रदायिक वैमनस्य फैलाने पर लगातार आक्रामक प्रहार करते रहे वहीं दूसरी ओर सूफियों ने अपने प्रेमाख्यानक संगीत में माध्यम से समाज में समरसता स्थापित करने में बड़ा योगदान दिया।

सूफी विचारधारा की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति प्रेमाख्यानक काव्यों में दृष्टिगत होती है। इस काव्य की एक प्रमुख विशेषता यह थी कि यह फारसी की 'मसनवी' शैली में लिखे जाते थे, परन्तु इनकी विषय वस्तु के अन्तर्गत हिन्दू परम्परा के पौराणिक एवं मिथकीय कथानकों को सम्मिलित किया जाता रहा है। साम्प्रादायिक समन्वय स्थापित करने के लिए इन प्रेमाख्यानकारों ने अपने काव्य में हिन्दू देवी देवताओं को भी पर्याप्त सम्मान दिया। प्रेमाख्यानक काव्य का आरम्भ 1370 में मुल्ला दाउद द्वारा रचित 'चन्दायन' या 'लोरिकहा' से हुई, और इस परम्परा की चरम अभिव्यक्ति मलिक मोहम्मद जायसी के प्रसिद्ध महाकाव्य 'पद्मावत' में हुई।

प्रेमाख्यानक काव्य में मानवीय प्रेम को जीवन के आधारभूत मूल्य के रूप में प्रतिस्थापित किया गया। इश्कमजाजी से इश्क हकीकी की यात्रा का प्रथम चरण मानवीय प्रेम की स्थापना है जो ईश्वरीय प्रेम से पहले आता है। इनके अध्यात्म का सार मानव प्रेम है।

सांस्कृतिक एवं धार्मिक संक्रमण के दौर में सूफी सन्तों ने भारतीय समाज में सामंजस्य स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। इस्लाम को भारतीय दर्शन को जोड़कर जहाँ एक ओर उन्होंने इस्लाम का भारतीयकरण किया वहीं दूसरी ओर मानव प्रेम को मूल्य के रूप में स्थापित करके सामाजिक समरसता को बढ़ाया। भारत की सामाजिक संस्कृति के निर्माण में सूफी सन्त परम्परा का अप्रतिम योगदान है क्योंकि इस परम्परा के माध्यम से हिन्दू और मुसलमानों में साहचर्य व प्रेम से रहने की विचारधारा का विकास हुआ।